हिदायतें

(परमपूज्य आदिगुरु महात्मा रामचंद्र जी (लालाजी) महाराज द्वारा १९२९ के भंडारे में बताई गयीं हिदायतें)

प्यारे इष्ट मित्रों को मालूम हो कि भ्रम और शक अपने तौर पर स्वयं दुखदायी हैं और नित नए दुःख पैदा करते रहते हैं. बिना सोचे समझे हुए भी अंधाधुंध कोई काम करने का नतीज़ा ज़रूर पैदा करता है. लेकिन उलटे नतीज़े पर ज़्यादातर लोग पहुँचते है. यह क्या हुआ कि कोई एक आदमी हज़ारों में से अपने मतलब पर पहुंचा हो. जब तक कि समझ होगी और काम करेंगे सब अंग ठीक तौर पर समझकर न किये जायेंगे उस समय तक आशा न रखनी चाहिए कि मंज़िल पर पहुंचेंगे.

इसके अतिरिक्त एक बात और भी है कि कोई काम करने के साथ बहुत सी बातें उसके सम्बन्ध में होती हैं और उन सम्बन्धी बातों का निर्वाह करना ऐसा ही ज़रूरी होता है जैसा कि असली काम का. अधिक जमायत ऐसे लोगों की है कि परमार्थ और परमार्थ पर ठीक ठीक पहुँचने के लिए रास्ता ज़रूर है लेकिन रास्ता चलने वाले लोग परमार्थ के रास्ते पर चलते हुए रोचक और भयानक के झगड़ों में फँसे हुए ऐसी आशाओं को दिल में बांधकर चलते हैं कि उत्तराखंड की बजाय दक्षिण में जा ठहरते हैं. यह अवश्य मानने योग्य है कि रास्ते में चलने में ऐसी कैफ़ियतें और ताक़तें पैदा होने लग जाती हैं कि ज़ाहिर में जिनकी शक्ल दुनियां के लगाव और शरीर के लाभों के वास्ते मालूम पड़ती हैं हालांकि यदि उनके ओर दिल न लगाया जाये तो आत्मा की तरफ़ को झुकाव पैदा करने में मददगार होते हैं ओर अगर उन्हीं बातों को मकसद मान कर उनकी तरफ़ अपनी तबज्जह समेटकर लगा दी जाती है तो वह यह काम और नीचे के रूहानी केन्द्रों या शारीरिक संबंधों के देवताओं को मददगार बन जाती हैं और थोड़े दिन बाद अपनी शक्तियां खोकर पछतावा का मुख देखना पड़ता है. फिर यह बात भी देखनी चाहिए कि जैसा ख्याल वैसा माल.

हम किन-किन दुनियावी आशाओं की गठरी और बोझा सरों पर लादकर ऊंची चढ़ाई पर चढ़ रहे हैं. यह कब तक सांस फूल रही है. पैर लड़खड़ा रहा है. डर है कि कहीं गहरे और अंधे खन्दक में न जा गिरें. चाहिए कि अब भी बोझ को उतारकर अलग फेंक दें और सावधान होकर फिर चढ़ना आरम्भ करें .

आइये देखते हैं कि रास्ता क्या है, तात्पर्य क्या और तात्पर्य प्राप्त करने का साधन क्या है ? साधन और मकसद तात्पर्य में क्या भेद है ? देखना यह है कि हम ज़रिया को मकसद जानकर चल रहे हैं या मकसद को मकसद समझकर. उसके बाद पंथ का भेद और रास्ता का सार तत्व यह है कि उसमें न तो लालसा है कि :-

(१) इससे पहले और आगे के हालात मालूम होने लग जाएं और न ऐसी सिध्दि शक्तियां पैदा हो जाएँ जो अदभुत बातें करने लग जाएँ जिनको देखकर लोगों में उनकी महिमा फैल जाये .

(२) इस रास्ते में यह वायदा भी नहीं किया जाता कि किसी के गुनाह माफ़ कर दिए जायेंगे या न क़यामत में बख्शवाने की उम्मीद दिखाई जाती है.

(३) दुनियाँ के काम निकलवाने का भी वायदा नहीं किया जाता कि ताबीज़ गंडों से काम बन जाया करे या मुक़द्दमात दुआ से जीते जाया करें या रोज़गार व्यापार में तरक़्क़ी हो या झाड़ -फूंक से बीमारी जाती रहे या होने वाली बात बतला दी जाया करे.

(४) न ऐसे प्रभाव का होना अनिवार्य है कि गुरु की तवज्जह से शिष्यों की अपने आप दुरुस्त हो जाएगी कि उसका गुनाह का ख्याल तक न आवे , स्वयं इबादत और संध्या के पूजा के काम होते रहें, मुरीद (शिष्य) को इरादा भी न करना पड़े या धर्मशास्त्र और उपनिषदों के समझने के लिए जहन और हाफ़िज़ा बढ़ जाये.

(५) न ऐसी बातनी (अन्तरीय) कैफ़ियतों के पैदा हो जाने की कोई मियाद है कि हर समय या खासकर इबादत (संध्या-पूजा) के समय आनंद में डूबा रहे कि अपने पराये की सुधि न रहे. .

(६) न जाप करने या शब्द अभ्यास और दूसरी साधनाओं के समय आकाश इत्यादि नज़र आना या किसी आवाज़ का सुनाई देना ज़रूरी है.

(७) न अच्छे अच्छे स्वप्नों का दिखाई देना और न अनुभवों का ठीक होना लाज़िमी है. हाँ, यदि ईश्वर ऐसी कृपा करें और दया करें कि ऐसी बातें पैदा हो जाएँ तो ताज्जुब भी नहीं है लेकिन ऐसी उम्मीदें दिल में बाँध कर रास्ता में ईश्वर को राज़ी रखना और उसकी रज़ामंदी किस बात में है और क्या उसका नजरिया है और धर्म पर उसके हुकुमों पर पूरी तौर पर चलना उसकी रज़ामंदी है .

ये हुकुम कुछ तो जाहिर के सम्बन्ध में हैं जैसे संध्या पूजन, उपासना, व्रत दान, बलवेष कर्म, यज्ञ , जप, तप, तीर्थ, शादी व्यौहार बाल-बच्चों, मर्द -औरत , भाई-बहिन, शौहर (पति) स्त्री और अन्य रिश्तेदारों के हक़ व्यवहार अदा करने की रस्में, लेन-देन , पैरवी मुक़ददमात, गवाही, वसीयत की तकसीम जायदाद, सलाम -दुआ, बात-चीत, खाना-पीना, सोना, ठहरना, मेहमानी इत्यादि - ये सब धर्मशास्त्र के सम्बन्ध में हैं . जैसे ईश्वर से प्रेम रखना, उससे डरना, उसको याद करना, दुनियाँ से प्रेम कम होना, वैराग, ईश्वर ने जो दिया है या जो वह चाहता है उसी पर राज़ी रहना, लालच न करना, संध्या पूजन में दिल का हाज़िर रखना , दीन धर्म के कर्मों को खालिस तबियत के लगाव से करना, किसी को हक़ीर न समझना, ख़ुद पसंदी न करना, गुस्सा को जबत करना इत्यादि इन सब आदतों को सलूक या पंथ कहते हैं. जिस तरह के जाहिरी कर्मों के करना का हुकुम है उसी प्रकार वातिनी (अंतरी) कर्मों के करने का हुकुम है और यह भी कि दिल की खराबी की वजह से कि ऊपरी शारीरिक कर्मों के करने में खराबी पैदा हो जाती है. मिसाल के तौर पर परमात्मा की मुहब्बत की कमी है तो संध्या करने में सुस्ती हो जाती है या जल्दी-जल्दी औंधे -सीधे कर ली जाती है या कंजूसी के कारण ज़कात (दान) और तीर्थ इत्यादि करने की हिम्मत नहीं होती या अहंकार और ज़्यादती गुस्सा की वजह से किसी पर जुल्म हो गया या हक़ मारे गए.

यदि जाहिर के कामों के करने में अहतयात भी कर ली जावे तो जब तक मन की इस्लाद (दुरुस्ती) या संभाल नहीं हो लेती तो ऐसी अहतयात चन्द दिन से ज़्यादा नहीं चल सकती. इसलिए मन की साज- संभाल उन दर्शनों की वजह से ज़रूरी ठहरी लेकिन अन्दर की खराबियां जरा कम समझ में आती हैं और यदि समझ में आ भी जाती हैं तो उनकी दुरुस्ती का तरीक़ा मालूम नहीं होता. और जो मालूम हो भी जाते हैं तो मन की खींचातानी उन पर अमल करना मुश्किल होता है. इसलिए उन ज़रूरतों के लिहाज़ पीर (आदर्श गुरु) की तजबीज की जाती है कि वह इन बातों को समझकर ख़बरदार करता है और उन्हें इलाज और तदबीर भी बतलाता है और मन के अंदर दुरुस्ती की ताक़त (इस्तेदाद) और उसके इलाज में सहूलियत और तदबीरों में कुब्बत (शक्ति) पैदा होने के लिए अभ्यास, जाप और लावलाओं की भी शिक्षा करता है . बस पन्थाई को दो काम करना पड़ते हैं - एक ज़रूरी अर्थात बाहरी और भीतरी हुक्मों की पाबन्दी करना और दूसरी जाप की कसरत चाहे जुबानी या ख्याली. इन हुकुमों को पाबन्दी ले परमात्मा की रज़ामंदी है और उसकी नज़दीकी भी हो जाती है . ज़्यादती जिकर अर्थात शब्द अभ्यास से उसकी बहुत अधिक रजामंदी और बहुत ज्यादा नज़दीकी हासिल होती है - यह खुलासा है सलूक यानी पंथ के तरीके और असली मक़सूद यानी लक्ष्य या गोल का. हकूक तरीकत अर्थात पंथ में दाखिल होकर क्या-क्या करना चाहिए ?

(१) जो छोटी-छोटी पुस्तकें ट्रैफ्ट की शक्लों में धर्म और पंथ की हिदायतों को मालूम कराने के लिए हों (या भविष्य में तैयार कराके बांटी जावेंगी) उनको एक-एक शब्द करके पढ़ना होगा.

(२)अपनी सब हालतें उन हिदायतों के माफिक रखना और बनाना पड़ेगा .

(३) जो काम करना हो उसका जायज या नाजायज होना अगर मालूम नहीं तो इस काम को करने से पहले प्रसिद्ध धार्मिक लोगों से तहकीकात करने के बाद अमल में लाना होगा.

(४) संध्या-उपासना - बाकायदा अनुष्ठान समेत करना लाजमी होगा. इसमें सत्संग के साथ तो अति उत्तम ही. यदि सत्संगी होते हुए भी बुराई होगी तो बिला किसी नज़र माकूल के वह व्यक्ति पकड़ के योग्य मुबरिबजह है. यदि बिला किसी उजर गफलत से रह जाये तो मर्म (तदामत) के साथ पश्चाताप करेगा .

(५) यदि माल व उजर जकात हो तो उसमें से देना होगा. इसी प्रकार खेत और मार्ग और जमीनदारी की पैदावार में से देना होगा इस हिस्से से.

(६) यदि इस योग्य गुंजाइश हो कि तीर्थ यात्रा कर सके तो तीर्थ यात्रा ज़रूर करना होगा.

(७) अपनी बीबी बच्चों के हक़ अदा करने होंगे. उनको हमेशा धर्म सम्बन्धी बातें बतलानी होंगी और आसान तरीक़ा उनके लिए यह है कि रात और दिन में थोड़ा सा कोई समय नियत करके किताबें आदि से अंत तक अपने घर वालों को पढ़ कर सुनावें और समझावें और जब वह समाप्त हो जावे तो फिर प्रारम्भ कर दें जब तक उनकी मसलें खूब पुख्ता न हो

जावें सुनते रहें और उन पर ऐसा करें कि किसी पंडित से सुना करें और उसको याद करके घर वालों से अवश्य कह दिया करें .

निम्नलिखित कार्य छोड़ने पड़ेंगे :

रेशमी या जरी का लिबास चार अंगुल से अधिक स्वयं पहिनना या लड़कों को पहनाना, मर्दों को चार मशकाल (एक मशकाल साढ़े चार माशे) या अधिक सोने की अंगूठी पहनना या औरतों को खड़ा जूता या मरदाना लिवास पहनना या ऐसे कपडे बारीक या छोटे पहनना जिसमें बदन दिखलाई दे या ऐसा पायजामा या धोती पहनना जो पैरों से नीचे इस कदर पहुंचे कि पेशाब इत्यादि करने में उसके छीटें पड़ें या ऐसी धोती बांधनी जिसमें बिला ज़रूरत बंदिश की वजह से बदन इत्यादि खुल जाने का अंदेशा रहे. किसी मर्द या औरत को बुरी निगाह से देखना या औरतों या लड़कों से ज़्यादा मेल-जोल रखना, मर्द को किसी परदावर औरत के पास या औरतों को बैठना किसी ऐसे मर्द के पास जिसके सामने उसको निकलने की मनाही है या अकेले मकान में रहना या बिना किसी सख्त मज़बूरी के सामने आ जाना चाहे वह गुरु ही हो या रिश्तेदार हो. और जहां सख्त मज़बूरी न हो वहां सर और बाज़ू और कलाई और पिंडलों और गला खोलना ठीक और दुरुस्त नहीं है. औरत को अच्छी-अच्छी पोशाक और जेबर से सामने आना बिलकुल ही बुरा है . मर्द और औरत का हंसना और ज़रूरत से ज़्यादा बातें करना यह सब छोड़ देना चाहिए. जहां तक हो सके कोई काम तड़क भड़क और दिखावट का करना जैसे कि आजकल रस्म और रसूम का खाना खिलाना , लेना-देना, न्यौता इत्यादि देना कम कर देना चाहिए. इस तरह फ़िज़ूल खर्ची करना या कपडे में बदन तकल्लफ करने यह भी घमंड और दिखलाई में दाखिल है. मुर्दे पर चिल्ला चिल्ला कर रोना, उसका दसवां बीसवां इत्यादि दूर दूर से उसकी मईयत के पीछे अर्साअर्सा तक रहना. लड़कों को कुछ न देना. हकूमत और रियासत वालों का गरीबों पर जुल्म करना, झूंठी नालिश करना, शौक के लिए कुत्ते पालना - इन सब का त्याग करना पड़ेगा .

राम सन्देश : मई-जून :२००६
